स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा (कला / विज्ञान / वाणिज्य) खण्ड–एक एवं इण्टरमीडिएट

देवनागरी लिपि के नामकरण एवं विकास

– डॉ. मुन्ना साह

देवनागरी लिपि के नामकरण के संबंध में अनेक मत हैं। जिनके आधार पर देवनागरी लिपि का नामकरण किया गया तथा उसे हिन्दी भाषा की लिपि के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वे मत इस प्रकार हैं –

1. गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा विशेष रूप से प्रयुक्त होने के कारण यह नागरी लिपि कहलाई।

2. बौद्ध ग्रंथ 'ललित बिस्तार' में उल्लिखित नागलिपि से देवनागरी का संबंध जोड़े जाने के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

3. तान्त्रिक चिह्न देवनागरी से साम्य होने के कारण इसे देवनागरी और फिर नागरी कहा गया।

4. देवनगर अर्थात् 'काशी' में प्रचार के कारण यह देवनागरी कहलाई।

5. मध्य युग में प्रचलित स्थापत्य की एक शैली 'नागर' के आधार पर इसका नाम नागरी पड़ा।

6. देवभाषा संस्कृत लिखने के लिए जिस लिपि का प्रयोग किया गया, उसे देवनागरी कहा गया।

7. नगरों में प्रचलित होने के कारण नागरी कहलाई।

मान्यता और अनुमान के आधार पर नागरी नागर अर्थात् शिष्ट जनों द्वारा प्रयोग की गई लिपि है। अपनी विशिष्टता के कारण यह देवनागरी कहलायी होगी। भारतीय भाषाओं में अन्य लिपि की अपेक्षा देवनागरी एक समर्थ लिपि है।

बौद्धों के ग्रंथ 'ललित बिस्तार' में चौंसठ प्रकार की लिपियों का उल्लेख मिलता है। जैन साहित्य में अट्ठारह प्रकार की लिपियों के नाम मिलते हैं। इस प्रकार ईसा

पूर्व भारत में लिपियों का खूब प्रयोग होता था। भारत की प्राचीन लिपियों में ब्राह्मी और खरोष्ठी ही दो प्रमुख लिपियाँ थी। अशोक के धर्म संबंधी अभिलेखों में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का प्रयोग मिलता है। ब्राह्मी लिपि बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती थी और खरोष्ठी लिपि दाईं ओर से बाईं की ओर।

शिलालेखों के आधार पर ब्राह्मी लिपि का समय ई.पू. 500 से 350 ई. माना जाता है। चौथी शती से ब्राह्मी दो शैलीयों में विभाजित हुई – उत्तरी शैली और दक्षिणी शैली। ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित लिपियाँ – 1. गुप्त लिपि, 2. कुटिल लिपि, 3.शारदा लिपि, 4. बंगला लिपि और 5. नागरी लिपि। नागरी दसवीं शती से उत्तर भारत में अस्तित्व में आई। दक्षिण भारत में इसके रूप आठवीं शती से ही विद्यमान थे। प्राचीन नागरी से बंगला, कैथी, गुजराती तथा मराठी आदि लिपियाँ विकसित हुईं। ब्राह्मी के दक्षिण शैली से विकसित लिपियाँ – 1. पश्चिमी, 2. मध्य प्रदेशी, 3. तेलुगु–कन्नड़, 4. ग्रंथ लिपि, 5. तमिल और 6. कलिंग लिपि।

वस्तुतः यह कह सकते हैं कि देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि की उत्तर शैली से हुई है।

———————————————— ••• ————————————————